लघु नाटिका

अन्तिम घड़ियाँ

पात्र परिचय:

वृद्ध धनी व्यक्ति दीनानाथ

यमदूत

देवदूत

ब्रह्माकुमार भाई

(एक वृद्ध, धनी व्यक्ति जिसका नाम दीनानाथ है और उम्र 60 वर्ष है, दिल पर हाथ रखकर आराम कुर्सी पर बैठा है। सामने मेज पर शराब की बोतल खुली रखी है। उसके सामने एकाएक एक भयानक-सा यमदूत प्रकट होता है। एक हाथ को उसकी तरफ फैलाकर वापस अपनी तरफ खींचता है मानो उसकी आत्मा को निकाल रहा हो)

दीनानाथ *(चीखते हुए)*- अरे, अरे, यह क्या कर रहे हो, मुझे खींचकर कहाँ ले जा रहे हो?

यमदूत- तुम्हारा अंत निकट है, तुम्हें मेरे साथ कष्टपूर्ण अंतिम यात्रा पर चलना है।

दीनानाथ- तुम्हारे साथ! क्यों चलूँ तुम्हारे साथ? कौन हो तुम? अभी मुझे बहुत काम है (चीखकर) तुम जाओ यहाँ से।

यमदूत- चिल्लाओ मत, कोई फायदा नहीं। अब तुम काल के पंजे से नहीं बच सकते। पहचानते हो मुझे? मैं तुम्हारे पापों का ही प्रतिरूप हूँ। तुम्हें किये हुए बुरे कर्मों का गिन-गिन कर दण्ड भोगना पड़ेगा।

दीनानाथ *(घबराकर)*- यह क्या कह रहे हो? मैंने कोई बुरा काम नहीं किया। हमेशा भलाई ही की है।

यमदूत- यह सत्य नहीं है। तुम्हारा पूरा हिसाब-किताब मेरे पास है। पुण्य का खाता बहुत ही क्षीण है।

दीनानाथ *(सिर पकड़ कर)*- यह कैसे हो सकता है? यह कैसे...

यमदूत- चलो, जल्दी करो।

दीनानाथ- मुझे कुछ समय की मोहलत दीजिए ताकि मैं कुछ अच्छा कर सकूँ।

यमदूत- मोहलत का समय अब नहीं है।

दीनानाथ- मेरा थोड़ा बहुत जो भी पुण्य है, उसके सदके ही सही, कुछ पल तो दे दो *(गिड़गिड़ाता है)* मैं अभी मरना नहीं चाहता। मैं अभी...

यमदूत ***(थोड़ी देर शांत भाव से आंखें बंद कर फिर खोलता है)-*** खुश हो जाओ। धर्मराज की अनुकम्पा से मुझे आदेश हुआ है कि तुम्हें पांच घंटे का समय दिया जाये, इसमें तुम जितना अच्छा चाहो, कर सकते हो। एक देवदूत जो सिर्फ तुम्हें दिखाई देगा, तुम्हारी बायीं तरफ रहेगा और कर्म पुस्तिका में तुम्हारा पल-पल का लेखा-जोखा लिखता रहेगा *(चला जाता है)*

(दीनानाथ झटके से उठता है, जैसे नींद से जागा हो और हैरान-परेशान सा होकर माथे पर हाथ फिराता है)

दीनानाथ- (बड़बड़ाते हुए)- क्या यह सपना था? हाँ, हाँ *(बायीं तरफ देखकर चौंकता है) (ऊँचे स्वर में)* अरे, यह देवदूत, यह तो सचमुच, यह तो कुछ लिख रहा है। *(पढता है)* लिखा है – बेवकूफ है सेठ दीनानाथ जो हकीकत को सपना समझने की भूल कर रहा है *(उछल पड़ता है)* क्या सचमुच यह हकीकत है? ओह, मैं मरना नहीं चाहता, क्या करूँ, क्या करूँ? *(इधर-उधर चक्कर काटता है)* सिर्फ पांच घंटे ही तो हैं, क्या करूँ, कुछ खा लूँ, जल्दी-जल्दी अच्छी-अच्छी चीजें। कुछ पी लूँ *(शराब की तरफ हाथ बढ़ाता है)* नहीं, नहीं। हाय! यह कमबख्त दिल भी तो घबरा रहा है (दिल को जोर से दबाकर आराम कुर्सी पर बैठ जाता है और अपनी दायीं ओर से पढ़ता है, लिखा है – 'मूर्ख दीनानाथ, जीवन भर इन तुच्छ चीजों के पीछे भागता रहा, अंतिम घड़ियाँ भी इन्हीं पर बर्बाद कर रहा है।'

दीनानाथ (भयभीत होकर)- अब बचना मुश्किल है, भगवान का नाम जप लेता हूँ *(आंखें बंद करके बोलने लगता है)* हरे राम, राम-राम, हरे..हरे *(हलकी सी आंखें खोलकर दायीं तरफ देखता है, लिखा है – 'मौत से भयभीत दीनानाथ भगवान का नाम जपने का ढोंग कर रहा है।')*

दीनानाथ (स्वगत) – कमबख्त को सब पता है। हाय, यह घर! यह धन-दौलत! सब कुछ छूट जायेगा, जिसके लिए मैंने दिन-रात एक किया *(थोड़ा सोचकर)* धन अनाथालय में देकर सफल कर लेता हूँ, पर उसका प्रबंधक बड़ा अकड़ता है, समझता क्या है खुद को? सामने से कभी नमस्ते भी नहीं करता। नहीं, नहीं, उसे तो कुछ नहीं दूंगा। देखता हूँ, एक दिन कैसे नहीं गिड़गिड़ाता है? *(मौत को सामने देखने के बाद भी जन्म-जन्म का अहंकार का संस्कार उस पर हावी हो रहा है)* क्यों न शिव मंदिर में दे दूँ, पर क्या फायदा! पिछली बार मुझे फुसलाकर पांच

हजार रुपये ले गये मंदिर की धर्मशाला के लिये और मेरा नाम भी नहीं खुदवाया। कोई भलाई मिलने वाली नहीं है। बेटे-बहुओं को तो मैं एक पैसा भी नहीं देने वाला, कभी पूछते भी हैं कि कहाँ हूँ, कैसा हूँ, मुफ्त की दौलत मिलने पर यूं ही लुटा देंगे। क्या करूँ, क्या करूँ..? *(दायीं ओर देखता है, लिखा है – 'दो कौड़ी की दौलत के लिए दीनानाथ जीवन के अमूल्य क्षण व्यर्थ गंवा रहा है')*

दीनानाथ *(स्वगत)*- उफ! इसे मेरी दौलत दो कौड़ी की नजर आती है पर मैंने तो इस दौलत के लिए सब कुछ दाँव पर लगा दिया – परिवार, संबंध, खुशी, ईमानदारी, चरित्र, न्याय। पर अब मैं कर भी क्या सकता हूँ? (निराशा से सिर हिलाता है) कितना समय गुजर गया? (घड़ी की तरफ देखता है) हे भगवान, अब मैं क्या करूँ? अब तो मुझे मरना ही है। *(निराशा से गर्दन झुका लेता है)*

(एक ब्रह्माकुमार भाई का प्रवेश)

दीनानाथ *(उसे देखकर स्वगत)*- इसे भी अभी टपकना था, ज्ञान-चर्चा करके मेरा दिमाग खराब करेगा।

ब्रह्माकुमार- कैसे हो दीनानाथ भाई?

दीनानाथ- कैसा हूँ? अपनी दुखद मौत का इंतजार कर रहा हूँ।

ब्रह्माकुमार- आत्मा को कभी मौत नहीं आती। मरना तो शरीर का होता है। आप शरीर नहीं चेतन आत्मा हैं (शांत भाव से उसे आत्मिक दृष्टि देता है)

दीनानाथ- यह चेतन-चेतन क्या कह रहे हो, मैं तो दीनानाथ हूँ, दीनानाथ।

ब्रह्माकुमार- दीनानाथ जी, यह तो आपके शरीर का नाम हैं परंतु शरीर को धारण करने वाली, उसका उपयोग करने वाली तो चेतन आत्मा है जो न कभी मरी थी, न मरेगी।

दीनानाथ- आज पता नहीं क्यों मुझे तुम्हारी बातें समझ में आ रही हैं। काश! मैंने पहले ध्यान दिया होता, बोलते जाओ, बड़ा आराम मिल रहा है।

ब्रह्माकुमार- मीठे आत्मिक भाई, हम सब आत्मायें इस रंगमंच पर खेल खेलने आई हैं। यह सृष्टि तो परिवर्तनशील है। हमारा असली घर तो सूर्य-चांद-तारागण से पार अलौकिक प्रकाशयुक्त परमधाम है जहाँ करुणा सिंधु ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव किरणों की बांहों में हमें समाने को आतुर हैं। आप अपने आत्मस्वरूप में टिककर बुद्धि रूपी नेत्र से उस प्यारे पिता को निहारकर तो देखो, कितना अतीन्द्रिय आनन्द आप पर बरसना प्रारंभ हो जायेगा। (दीनानाथ शांत होकर आत्म-स्वरूप में टिकता है। ब्रह्माकुमार भाई चला जाता है, यमदूत प्रवेश करता है)

यमदूत ***(सख्त आवाज में)-*** दीनानाथ, समय हो गया, अब तुम्हें चलना ही होगा।

दीनानाथ- हाँ भई, यह देश बेगाना है, शरीर पुराना है, अब नहीं कोई बहाना है, मुझे प्रभु के घर जाना है।

यमदूत ***(आश्चर्य से)-*** हैं! इतनी जल्दी कायापलट! प्रभु, आप विचित्र हैं, आपकी रचना न्यारी है फिर भी सबको प्यारी है (देवदूत की तरफ मुखातिब होकर) दिखाओ तुमने क्या लिखा है?

(देवदूत लिखत आगे कर देता है, यमदूत जोर से पढ़ता है) –

'पूरी जिंदगी जिसके लिए छोटी पड़ गई थी, अंतिम घड़ियों में दीनानाथ ने वह ईश्वरीय खजाना पा लिया। अब वह बदल चुका है। उसके मन की समस्त इच्छाएँ, तृष्णाएँ, कामनाएँ परिष्कृत हो चुकी हैं, वह भगवान के राज्य का अधिकारी है।'

यमदूत- कमाल है, चलिए दीनानाथ भाई! मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।